ब्रिटिश सरकार द्वारा
जब्तशुदा कृति

सोज़े वतन

मुंशी प्रेमचन्द

सोज़े-वतन

लेखक:

—मुंशी प्रेमचन्द

❑ पुस्तक : सोज़े–वतन

❑ लेखक : मुंशी प्रेम चन्द

❑ संस्करण : 2002

❑ मूल्य : 22/- (बाईस रुपये मात्र)

❑ प्रकाशक : सुर्कीति प्रकाशन,
डी. सी. निवास के सामने,
करनाल रोड़,
कैथल-136027 (हरियाणा)
फोन 01746-25862

❑ मुद्रक : सुर्कीति प्रिंटर्ज,
करनाल रोड़, कैथल

सोज़े-वतन

ملاك-أزرق

बिटिश सरकार द्वारा जब्तशुदा कृति

कथा समाट मुंशी प्रेमचन्द को जन्म
देने वाली ऐतिहासिक कृति

मुंशी प्रेमचन्द

में कबूल करूंगी। अगर तुझे वह चीज न मिले तो खबरदार इधर रूख न करना, वर्ना सूली पर खिचवा दूंगी। दिलफ़िगार को अपनी भावनाओं के प्रदर्शन का, शिकवे–शिकायत का, प्रेमिका के सौंदर्य–दर्शन का तनिक भी अवसर न दिया गया। दिलफ़िरेब ने ज्योंहि यह फैसला सुनाया, उसके चोबदारों ने गरीब दिलफ़िगार को धक्के देकर बाहर निकाल दिया। और आज तीन दिन से यह आफत का मारा आदमी उसी कंटीले पेड़ के नीचे उसी भयानक मैदान में बैठा हुआ सोच रहा है कि क्या करूं । दुनिया की सबसे अनमोल चीज मुझको मिलेगी ? नामुमकिन ! और वह है क्या ? क़ारूं का खजाना ? आबे हयात ? खुसरों का ताज ? ज़ामे–जम तख्ते–ताऊस ? परवेज की दौलत ? नहीं, यह चीजें हरगिज नहीं। दुनिया में जरूर इनसे भी महंगी, इनसे भी अनमोल चीजें मौजूद है मगर वह क्या है। कहां है ? कैसे मिलेगी ? या खुदा, मेरी मुश्किल क्योंकर आसान होगी ?

दिलफ़िगार इन्हीं ख्यालों में चक्कर खा रहा था और अक्ल कुछ काम न करती थी। मुनीर शामी को हातिम–सा मददगार मिल गया। ऐ काश! कोई मेरी भी मददगार हो जाता, ऐ काश! मुझे भी उस चीज का जो दुनिया की सबसे बेशकीमत चीज है, नाम बतला दिया जाता ! बला से वह चीज हाथ न आती मगर मुझे इतना मालूम हो जाता कि वह किस किस्म की चीज है। मैं घड़े बराबर मोती की खोज में जा सकता हूं। मैं समुन्दर का गीत, पत्थर का दिल, मौत की आवाज और इनसे भी ज्यादा बेनिशान चीजों की तलाश में कमर कस सकता हूं। मगर दुनिया की सबसे अनमोल चीज ! यह मेरी कल्पना की उड़ान से बहुत ऊपर है।

आसमान पर तारे निकल आये थे। दिलफ़िगार यकायक खुदा का नाम लेकर उठा और एक तरफ को चल खड़ा हुआ। भूखा–प्यासा, नंगे बदन, थकन से चूर, वह बरसों वीरानों और आबादियों की खाक छानता फिरा, तलवे कांटों से छलनी हो गये, शरीर में हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देने लगी। मगर वह चीज जो दुनिया की सबसे बेश–क़ीमती चीज थी, न मिली और न उसका कुछ निशान मिला।

एक रोज वह भूलता–भटकता एक मैदान में जा निकला, जहां हजारों आदमी गोल बांधे खड़े थे। बीच में कई अमामे और चोगेवाले दढ़ियल काजी अफ़सरी शान से बैठे हुए आपस में कुछ सलाह–मशविरा

दिलफ़िगार कुछ तो कमजोरी की वजह से और कुछ यहां की कैफियत देखने के इरादे से ठिठक गया। क्या देखता है कि कई लोग नंगी तलवारें लिए एक कैदी को जिसके हाथ–पैर में जंजीरे थीं। पकड़े चले आ रहे है। सूली के पास पहुंचकर सब सिपाही रूक गये और कैदी की हथकड़ियां, बेड़ियां सब उतार ली गयी। इस अभागे आदमी का दामन सैकड़ों बेगुनाहों के खून के छींटों से रंगीन था, और उनका दिल नेकी के ख्यालों और रहम की आवाज से जरा भी परिचित न था। उसे काला चोर कहते थे। सिपाहियों ने उसे सूली के तख्ते पर खड़ा कर दिया, मौत की फांसी उसकी गर्दन में डाल दी और जल्लादों ने तख्ता खीचनें का इरादा किया कि वह अभागा मुजरिम चीखकर बोला–खुदा के वास्ते मुझे एक पल के लिए फांसी से उतार दो ताकि अपने दिल की आखिरी आरजू निकाल लूं। यह सुनते ही चारों तरफ सन्नाटा छा गया। लोग अचम्भे में आकर ताकने लगे। क़ाजियों ने एक मरने वाले आदमी की अंतिम याचना को रद्द करना उचित न समझा और बदनसीब पापी काला चोर जरा देर के लिए फांसी से उतार लिया गया ।

इसी भीड़ में एक खूबसूरत भोला–भाला लड़का एक छड़ी पर सवार होकर अपने पैरों पर उछल–उछल फ़र्ज़ी घोड़ा दौड़ा रहा था और अपनी सादगी की दुनिया में ऐसा मगन था कि जैसे वह इस वक्त सचमुच किसी अरबी घोड़े का शहसवार है। उसका चेहरा उस सच्ची खुशी से कमल की तरह खिला हुआ था जो चन्द दिनों के लिए बचपन ही में हासिल होती है और जिसकी याद हमको मरते दम तक नहीं भूलती। उसका दिल अभी तक पाप की गर्द और धूल से अछूता था और मासूमियत उसे अपनी गोद में खिला रही थी।

बदनसीब काला चोर फांसी से उतरा। हज़ारों आंखें उस पर गड़ी हुई थीं। वह उस लड़के के पास आया उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगा। उसे इस वक्त वह ज़माना याद आया जब वह खुद ऐसा ही भोला–भाला ऐसा ही खुश–व–खुर्रम और दुनिया की गंदगियों से ऐसा ही पाक साफ़ था। मां गोदियों में खिलाती थी, बाप बलाएं लेता था और सारा

हाथ में ले लिया और उसके दिल ने कहा– बेशक दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है जिस पर तख्ते ताऊस और जामेजम और आबे हयात और ज़रे परवेज़ सब न्योछावर हैं ।

इस ख़्याल से खुश होता कामयाबी की उम्मीद में सरमस्त, दिल–फ़िगार अपनी माशूका दिलफ़रेब के शहर मीनोसवाद को चला। मगर ज्यों–ज्यों मंज़िले तय होती जाती थीं उसका दिल बैठा जाता था कि कहीं उस चीज़ की, जिसे मैं दुनिया की सबसे बेशक़ीमत चीज़ समझता हूं, दिलफ़रेब की आंखों में क़द्र न हुई तो मैं फांसी पर चढ़ा दिया जाऊंगा और इस दुनियां से नामुराद जाऊंगा। लेकिन जो हो सो हो, अब तो क़िस्मत–आज़माई है। आख़िरकार पहाड़ और दरिया तय करते शहर मानोसवाद में आ पहुंचा और दिलफ़रेब की ड्योढ़ी पर जाकर विनती की कि थकान टूटा हुआ दिलफ़िगार खुदा के फ़जल से हुक्म की तामील करके आया है, और आपके क़दम चूमना चाहता है। दिलफ़रेब ने फ़ौरन अपने सामने बुला भेजा और एक सुनहरे परदे की ओट से फ़रमाइश की कि वह अनमोल चीज़ पेश करो। दिलफ़िगार ने आशा और भय का एक विचित्र मनःस्थिति मे वह बूंद पेश की और उसकी सारी कैफ़ियत बहुत पुरअसर लफ़्ज़ों में बयान की। दिलफ़रेब ने पूरी कहानी बहुत ग़ौर से सुनी और वह भेंट हाथ में लेकर जरा देर तक ग़ौर करने के बाद बोली– दिलफ़िगार, बेशक तूने दुनिया की एक बेशक़ीमत चीज़ ढूंढ़ निकाली, तेरी हिम्मत और तेरी सूझबूझ की दाद देती हूं ! मगर यह दुनिया की सबसे बेशक़ीमत चीज़ नहीं, इसलिए तू यहां से जा और फिर कोशिश कर, शायद अब कि तेरे हाथ वह मोती लगे और तेरी क़िस्मत में मेरी गुलामी लिखी हो। जैसा कि मैंने पहले ही बतला दिया था मैं तुझे फांसी पर चढ़वा सकती हूं मगर मैं तेरी जां बख्शी करती हूं इसलिए कि तुझमें वह गुण मौजूद हैं, जो मैं अपने प्रेमी में देखना चाहती हूं और मुझे यक़ीन है कि तू जरूर कभी–न–कभी कामयाब होगा।

नाकाम और नामुराद दिलफ़िगार इस माशुक़ाना इनायत से जरा दिलेर होकर बोला–ऐ दिल की रानी, बड़ी मुद्दत के बाद तेरी ड्योढ़ी पर सजदा करना नसीब होता है। फिर खुदा जाने ऐसे दिन कब आयेंगे, क्या तू अपने जान देने वाले आशिक़ के बुरे हाल पर तरस न खायेगी और क्या अपने रूप की एक झलक दिखाकर इस जलते हुए दिलफ़िगार की आनेवाली सख़्तियों के झेलने की ताक़त न देगी ? तेरी एक मस्त निगाह के नशे से चूर होकर मैं वह कर सकता हूं जो आज तक किसी से न हुआ

उस खून की बूंद को जिसके आगे यमन का लाल भी हेच है, हाथ में ले लिया और इस दिलेर राजपूत की बहादुरी पर हैरत करता हुआ अपने वतन की तरफ़ रवाना हुआ और सख्तियां झेलता आख़िकार बहुत दिनों के बाद रूप की रानी मलका दिलफ़रेब की ड्योढ़ी पर जा पहुंचा और पैग़ाम दिया कि दिलफ़िगार सुर्खरू और कामयाब होकर लौटा है और दरबार में हाजिर होना चाहता है। दिलफ़रेब ने उसे फौरन हाज़िर होने का हुक्म दिया। खुद हस्बे मामूल सुनहरे परदे की ओट में बैठी और बोली– दिलफ़िगार, अबकी तू बहुत दिनों के बाद वापस आया है। ला, दुनिया की सबसे बेशक़ीमत चीज़ कहां है ?

दिलफ़िगार ने मेंहदी–रची हथेलियों को चूमते हुए खुन का वह क़तरा उस पर रख दिया और उसकी पूरी कैफ़ियत पूरजोश लहजे में कह सुनायी। वह खामोश भी न होने पाया था कि यकायक वह सुनहरा परदा हट गया और दिलफ़िगार के सामने हुस्न का एक दरबार सज़ा हुआ नज़र आया जिसकी एक–एक नाज़नीन जुलेखा में बढ़कर थी। दिलफ़िगार बड़ी शान के साथ सुनहरी मसनद पर सुशोभित हो रही थी। दिलफ़िगार हुस्न का यह तलिस्म देखकर अचम्भे में पड़ गया और चित्रालिखित–सा खड़ा रहा कि दिलफ़रेब मसनद से उठी ओर कई क़दम आगे बढ़कर उससे लिपट गयी। गाने वालियों ने खुशी के गाने शुरू किये, दरबारियों ने दिलफ़िगार को नजरें भेंट की और चांद–सूरज को बड़ी इज़्ज़त के साथ मसनद पर बैठा दिया। जब वह लुभावना गीत बन्द हुआ तो दिलफ़रेब खड़ी हो गयी और हाथ जोड़कर दिलफ़िगार से बोली–ऐ जांनिसार आशिक दिलफ़िगार ! मेरी दुआएं बर आयीं और खुदा ने मेरी सुन ली और तुझे कामयाब व सुर्खरू किया। आज से तू मेरा मालिक है और मैं तेरी लौंडी !

यह कहकर उसने एक रत्नजटित मंजूषा मंगायी और उसमें से एक तख्ती निकाली जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था —

'खून का वह आखिरी क़तरा जो वतन की हिफ़ाजत में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है ।'

❑ ❑

शेख़ मख़मूर

मुल्के जन्नतनिशां के इतिहास में बहुत अंधेरा वक़्त था जब शाह किशवर की फ़तहों की बाढ़ बड़े जोर–शोर के साथ उस पर आयी। सारा देश तबाह हो गया। आजादी की इमारतें ढह गयीं और जानोमाल के लाले पड़ गये। शाह बामुराद खूब जी तोड़कर लड़ा, खूब बहादुरी का सबूत दिया और अपने खानदान के तीन लाख सूरमाओं को अपने देश पर चढ़ा दिया मगर विजेता की पत्थर काट देनेवाली तलवार के मुक़ाबले में उसकी यह मर्दाना जांबाजियां बेअसर साबित हुई। मुल्क पर शाह किशवरकुशा की हुकूमत का सिक्का जम गया और अपना सब कुछ आजादी के नाम पर कुर्बान करके एक झोंपड़े में ज़िन्दगी बसर करने लगा ।

यह झोंपड़ा पहाड़ी इलाकें में था। आस–पास जंगली क़ौमें आबाद थीं और दूर–दूर तक पहाड़ों के सिलसिले नज़र आते थे। इस सुनसान जगह में शाह बामुराद मुसीबत के दिन काटने लगा, दुनिया में अब उसका कोई दोस्त न था। वह दिन भर आबादी से दूर एक चट्टान पर अपने ख़्याल में मस्त बैठा रहता था। लोग समझते थे कि यह कोई ब्रह्मज्ञान के नशे में चूर सूफ़ी है। शाह बामुराद को यों बसर करते एक जमाना बीत गया और जवानी की बिदाई और बुढ़ापे के स्वागत की तैयारियां होने लगीं ।

तब एक रोज़ शाह बामुराद बस्ती के सरदार के पास गया और उससे कहा– मैं अपनी शादी करना चाहता हूं। उसकी तरफ़ से पैगाम सुनकर वह अचम्भे में आ गया चूंकि दिल में शाह साहब के कमाल और फ़क़ीरी में गहरा विश्वास रखता था, पलटकर जवाब न दे सका और अपनी कुंवारी नौजवान बेटी उनको भेंट की। तीसरे साल इस युवती की क़ामनाओं की बाटिका में एक नौरस पौध उगा। शाह साहब खुशी के मारे जामे में फूले न समाये। बच्चे को गोद में उठा लिया और हैरत में डूबी हुई मां के सामने जोश–भरे लहजे में बोले–'खुदा का शुक्र है कि मुल्के जन्नतनिशां का वारिस पैदा हुआ।'

बच्चा बढ़ने लगा। अक़्ल और ज़हानत में, हिम्मत और ताकत में, वह अपनी दुगनी उम्र के बच्चों से बढ़कर था। सुबह होते ही ग़रीब रिन्दा बच्चे का बनाव–सिंगार करके और उसे नाश्ता खिलाकर अपने काम–धन्धों में लग जाती थी और शाह साहब बच्चे की उंगली पकड़कर उसे आबादी से दूर चट्टान पर ले जाते । वहां कभी उसे पढ़ाते, कभी हथियार चलाने के मश्क कराते और कभी उसे शाही कायदे समझाते। बच्चा था तो कामसिन, मगर इन बातों में ऐसा जी लगाता और ऐसे चाव से लगा रहता गोया उसे अपने वंश का हाल मालूम है। मिज़ाज भी बादशाहों जैसा था। गांव का एक–एक लड़का उसके हुक्म का फ़रमाबरदार था। मां उस पर गर्व करती, बाप फूला न समाता और सारे गांव के लोग समझते कि यह शाह साहब के जप–तप का असर है ।

बच्चा मसऊद देखते–देखते एक सोलह साल का नौजवान

सकता। यह सुनते ही एक देव जैसा लम्बा–तड़ंगा हैकल पहलवान ललकार कर बढ़ा और मसऊद की कलाई पर तेग़े का तुला हुआ हाथ चलाया। मसऊद ने वार खाली दिया और सम्हलकर तेग़े का वार किया तो पहलवान की गर्दन की पट्टी तक बाक़ी न रही। यह कैफ़ियत देखते ही मलिका की आंखों से चिनगारियां उड़ने लगीं। भयानक गुस्से के स्वर में बोली– ख़बरदार, यह शख्स यहां से जिन्दा न जाने पावे। चारों तरफ से आज़माये हुए मज़बूत सिपाही पिल पड़े और मसऊद पर तलवारों और बर्छियों की बौछार पड़ने लगी ।

मसऊद का जिस्म जख़्मों से छलनी हो गया। खून के फ़वारे जारी थे और खून प्यासी तलवारें ज़बान खोल बार–बार उसकी तरफ़ लपकती थीं और उसका खून चाटकर अपनी प्यास बुझा लेती थीं । कितनी ही तलवारें उसकी ढाल से टकराकर टूट गयीं, कितने बहादुर सिपाही ज़ख्मी होकर तड़पने लगे और कितने ही उस दुनिया को सिधरे। मगर मसऊद के हाथ में वह आबदार शमशीर ज्यों–की–त्यों बिजली की तरह कौंध्ती और सुथराव करती रही। यहां तक कि इस फ़न के कमाल और समझनेवाली मलिका ने खुद उसकी तारीफ़ का नारा बुलन्द किया और उसके तेग़े को चूमकर बोली– मसऊद! तू बहादूरी के समुन्दर का मगर है। शेरों के शिकार में वक़्त बर्बाद मत कर। दुनिया में शिकार के अलावा और भी ऐसे मौके है जहां तू अपने आबदार तेग़ का जौहर दिखा सकता है। जा और मुल्कोक़ौम की ख़िदमत कर। सैरो शिकार हम जैसी औरतों के लिए छोड़ दे।

मसऊद के दिल ने गुदगुदाया, प्यार की बानी ज़बान तक आयी मगर बाहर निकल न सकी और उसी वक्त वह अपने दिल में किसी की पलकों की टीस लिये हुए तीन हफ़्तों के बाद अपनी बेक़रार मां के कदमों पर जा गिरा।

3

नमकख़ोर सरदार की फ़ौज रोज़–ब–रोज़ बढ़ने लगी। पहले तो वह अंधेरे के पर्दे में शाही ख़ज़ानों पर हाथ बढ़ाता रहा, धीरे–धीरे एक

कर्इ भी कसर न की मगर वह ताकत, वह जोश, वह जज्बा जो सरदार नमकख़ार और उसके दोस्तों के दिलों को हिम्मत के मैदान में आगे बढ़ाता रहता था किशवरकुशा दोयम के सिपाहियों में गायब था। लड़ाई के कला–कौशल, हथियारों की खूबी और ऊपर दिखायी पड़ने वाली शान–शौकत के लिहाज़ से दोनों फ़ौजों का कोई मुक़ाबला न था। बादशाह के सिपाही लहीम–शहीम, लम्बे–तड़ंगे और आज़माये हुए थे। उनके साज–समान और तौर–तरीक़े से देखने वालों के दिलों पर एक डर सा छा जाता था और वहम भी यह गुमान न कर सकता था कि इस ज़बर्दस्त जमात कें मुक़ाबले में निहत्थी–सी, अध्नंगी और बेक़ायदा सरदारी फ़ौज एक पल के लिए भी पैर जमा सकेगी। मगर जिस वक्त 'मारो' की दिल बढ़ाने वाली पुकार हवा में गूंजी एक अजीबोग़रीब नज़्ज़ारा सामने आया। सरदार के सिपाही तो नारे मारकर आगे धावा करते थे और बादशाह की फ़ौज भागने की राह पर दबी हुए निगाहें डालती थी। दम की दम में मोर्चे गुबार की तरह फट गये और जब मस्क़ात के मज़बूत क़िले मे सरदार नमकख़ोर शाही क़िलेदार की मसनद पर अमीराना ठाट–बाट में बैठा और अपनी फ़ौज की कारगुजारियों और जांबाजियों का इनाम देने के लिए एक तश्त में सोने के तमग़ मंगवाकर रक्खे तो सबसे पहले जिस सिपाही का नाम पुकारा गया वह नौजवान मसऊद था।

मसऊद पर इस वक्त उसकी फ़ौज घमंड करती थी। लड़ाई के मैदान में सबसे पहले उसी की तलवार चमकती थी। और धावे के वक़्त सबसे पहले उसी के क़दम उठते थे। दुश्मन के मोर्चों में ऐसा बेधड़क घुसता था जैसे आसमान में चमकता हुआ लाल तारा। उसकी तलवार के वार क़यामत थे और उसके तीर का निशाना मौत का सन्देश।

मगर टेढ़ी चाल की तक़दीर से उसका यह प्रताप, यह प्रतिष्ठा न देखी गयी। कुछ थोड़े से आज़माये हुए अफ़सर जिनके तेग़ों की चमक मसऊद क़े तेग़ के सामने मन्द पड़ गयी थीं, उससे खार खाने लगे और उसे मिटा देने की तदबीरें सोचने लगे। संयोग से उन्हें मौक़ा भी जल्द हाथ आ गया ।

किशवरकुशा दोयम ने बागियों को कुचलने के लिए अबकी एक

अपनी हार को बुलाना था। आख़िरकार यह राय तय पाई कि इस जगह से आबादी का निशान मिटाकर हम लोग क़िलेबन्द हो जायें। उस वक़्त नौजवान मसऊद ने उठकर बड़े पुरजोश लहजे में कहा–

'नहीं, हम क़िलेबन्द न होंगे, हम मैदान में रहेंगे और हाथोंहाथ दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे। हमारे सीनों की हड्डियां ऐसी कमज़ोर नहीं है कि तीर–तुपुक के निशाने बर्दाश्त न कर सकें। क़िलेबन्द होना इस बात का एलान है कि हम आमने–सामने नहीं लड़ सकते। क्या आप लोग, जो शाह बामुराद के नामलेवा है, भूल गये कि इसी मुल्क पर उसने अपने ख़ानदान के तीन लाख सपूतों को फूल की तरह चढ़ा दिया ? नहीं, हम हरगिज़ क़िलेबन्द न होंगे। हम दुश्मन के मुक़ाबले में ताल ठोंककर आयंगे और अगर खुदा इंसाफ़ करनेवाला है तो ज़रूर हमारी तलवारें दुश्मनों से गले मिलेंगी और हमारी बर्छिया उनके पहलू में जगह पाएंगी ।'

सैकड़ों निगाहें मसऊद के पुरजोश चेहरे की तरफ़ उठ गयीं। सरदारों की त्योरियों पर बल पड़ गये और सिपाहियों के सीने जोश से धड़कने लगे। सरदार नमकख़ोर ने उसे गले से लगा लिया और बोले– मसऊद, तेरी हिम्मत और हौसले की दाद देता हूं। तू हमारी फ़ौज की शान है। तेरी सलाह मर्दाना सलाह है। बेशक हम क़िलेबन्द न होंगे। हम दुश्मन के मुक़ाबिले में ताल ठोंकर आएंगे और अपने प्यार जन्नतनिशां के लिए अपना खून पानी की तरह बहायेंगे। तू हमारे लिए आगे–आगे चलने वाली मशाल है और हम सब आज इसी रोशनी में क़दम आगे बढ़ायेंगे ।

मसऊद ने चुने हुए सिपाहियों का एक दस्ता तैयार किया और कुछ इस दम–ख़म और कुछ इस जोशोख़रोश से मीरशुजा पर टूटा कि उसका सारी फ़ौज में खलबली पड़ गयी। सरदार नमकख़ोर ने जब देखा कि शाही फ़ौज के क़दम डगमगा रहे हैं, तो अपनी पूरी ताक़त से बादल और बिजली की तरह लपका और तेग़ों से तेग़े और बर्छियों से बर्छियों खड़कने लगीं। तीन घंटे तक बला का शोर मचा रहा, यहां तक कि शाही फ़ौज के क़दम उखड़ गये और वह सिपाही जिसकी तलवार मीरशुजा से गले मिली वह मसऊद था ।

तब सरदारी फौज और अफसर सब–के–सब लूट के माल पर

खेल–कूद में रूचि न थी। मैंने उसे कभी क्रिकेट में नहीं देखा। शाम होते ही सीधे घर चला आता और लिखने–पढ़ने में लग जाता।

मैं धीरे–धीरे उससे इतना हिल–मिल गया कि बजाय शिष्य के उसको अपना दोस्त समझने लगा। उम्र के लिहाज से उसकी समझ आश्चर्यजनक थी। देखने में 16–17 साल से ज्यादा न मालूम होता मगर जब कभी मैं रवानी में आकर दुर्बोध कवि–कल्पनाओं और कोमल भावों की उनके सामने व्याख्या करता तो मुझे उसकी भंगिमा से ऐसा मालूम होता कि एक–एक बारीकी से समझ रहा है। एक दिन मैंने उससे पूछा–मेहर सिंह, तुम्हारी शादी हो गयी ?

मेहर सिंह ने शरमाकर जवाब दिया–अभी नहीं।

मैं–तुम्हें कैसी औरत पसंद है ?

मेहर सिंह– मैं शादी करूंगा ही नहीं।

मैं–क्यों ?

मेहर सिंह–मुझ जैसे जाहिल गंवार के साथ शादी करना कोई औरत पसंद न करेगी।

मैं–बहुत कम ऐसे नौजवान होंगे जो तुमसे ज्यादा लायक हों या तुमसे ज्यादा समझ रखते हों।

मेहर सिंह ने मेरी तरफ अचम्भे से देखकर कहा–आप दिल्लगी करते है।

मैं–दिल्लगी नहीं, मैं सच कहता हूं। मुझे खुद आश्चर्य होता है कि इतने कम दिनों में तुमने इतनी योग्यता क्योंकर पैदा कर ली। अभी तुम्हें अंग्रेजी शुरू किये तीन बरस से ज्यादा नहीं हुए।

मेहर सिंह–क्या मैं किसी पढ़ी–लिखी लेडी को खुश रख सकूंगा ।

मैं–(जोश से) बेशक !

5

गर्मी का मौसम था। मैं हवा खाने शिमले गया हुआ था। मेहर सिंह भी मेरे साथ था। वहां मैं बीमार पड़ा। चेचक निकल आयी। तमाम

मेहर सिंह आठों पहर मेरे ही पास बैठा रहता। मुझे खिलाता–पिलाता, उठाता–बिठाता। रात–दिन भर चारपाई के करीब बैठकर जागते रहना मेहर सिंह ही का काम था। सगा भाई भी इससे ज्यादा सेवा नहीं कर सकता था। एक महीना गुजर गया। मेरी हालत रोज–ब–रोज बिगड़ती जाती थी। एक रोज मैंने डाक्टर को मेहर सिंह से कहते हुआ सुना कि इनकी हालत नाजुक है। मुझे यकीन हो गया कि अब न बचूंगा, मगर मेहर सिंह कुछ ऐसी दृढ़ता से मेरी सेवा शुश्रुषा में लगा हुआ था कि जैसे यह मुझे जबर्दस्ती मौत के मुंह से बचा लेगा। एक रोज शाम के वक्त मैं कमरे में लेटा हुआ था कि किसी के सिसकी लेने की आवाज आयी । वहां मेहर सिंह को छोड़कर और कोई न था । मैंने पूछा –मेहर सिंह, मेहर सिंह, तुम रोते हो !

मेहर सिंह ने जब्त करके कहा –नहीं, रोऊं क्यों, और मेरी तरफ बड़ी दर्द–भरी आंखों से देखा।

मैं–तुम्हारे सिसकने की आवाज आयी।

मेहर सिंह–वह कुछ बात न थी। घर की याद आ गयी थी।

मैं–सच बोलो।

मेहर सिंह की आंखें फिर डबडबा आयी। उसने मेज पर से आइना उठाकर मेरे सामने रख दिया। हे नारायण ! मैं खुद अपने को पहचान न सका। चेहरा इतना ज्यादा बदल गया था। रंगत बजाय सुर्ख के सियाह हो रही थी और चेचक के बदनुमा दागों से सूरत बिगाड़ दी थी। अपनी यह बुरी हालत देखकर मुझसे भी जब्त न हो सका और आंखें डबडबा गयी। वह सौंदर्य जिस पर मुझे इतना गर्व था बिलकुल विदा हो गया था ।

6

मैं शिमले से वापस आने की तैयारी कर रहा था। मेहर सिंह उसी रोज मुझसे विदा होकर अपने घर चला गया था। मेरी तबीयत बहुत उचाट हो रही थी। असबाब सब बंध चुका था कि एक गाड़ी मेरे दरवाजे पर

रहा हूं या यह हकीकत है। लीला के गालों पर वह लाली न थी न वह चुलबुलापन बल्कि वह बहुत गम्भीर और पीली–पीली सी हो रही थी। आखिर मेरी हैरत कम न होते देखकर उसने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा– तुम कैसे जेण्टिलमैन हो कि एक शरीफ लेडी को बैठने के लिए कुर्सी भी नहीं देते !

मैंने अन्दर से कुर्सी लाकर उसके लिए रख दी। मगर अभी तक यही समझ रहा था कि सपना देख रहा हूं।

लीलावती ने कहा – शायद तुम मुझे भूल गये ।

मैं–भूल तो उम्र भर नहीं सकता मगर आंखों का एतबार नहीं आता।

लीला–तुम तो बिलकुल पहचाने नहीं जाते।

मैं– तुम भी तो वह नहीं रही। मगर आखिर यह भेद क्या है, क्या तुम स्वर्ग से लौट आयी ?

लीला–मैं तो नैनीताल में अपने मामा के यहां थी।

मैं–और वह चिठ्ठी मुझे किसने लिखी थी और तार किसने दिया था ?

लीला– मैंने ही।

मैं–क्यों ? तुमने यह मुझे धोखा क्यों दिया ? शायद तुम अन्दाजा नहीं कर सकतीं कि मैंने तुम्हारे शोक में कितनी पीड़ा सही है।

मुझे उस वक्त एक अनोखा गुस्सा आया– यह फिर मेरे सामने क्यों आ गयी ! मर गयी थी तो मरी ही रहती !

लीला–इससे एक गुर था, मगर यह बात तो फिर होती रहेंगी। आओ इस वक्त तुम्हें अपनी एक लेडी फ्रेण्ड से इण्ट्रोड्यूस कराऊं, वह तुमसे मिलने की बहुत इच्छुक है।

मैंने अचरज से पूछा–मुझसे मिलने की ! मगर लीलावती ने इसका कुछ जवाब न दिया और मेरा हाथ पकड़कर गाड़ी के सामने ले गयी। उसमें एक युवती हिन्दुस्तानी कपड़े पहने बैठी हुई थी। मुझे देखते ही उठ खड़ी हुई और हाथ बढ़ा दिया । मैंने लीला की तरफ़ सवाल करती हुई आंखों से देखा ।

लीला–क्या तुमने नहीं पहचाना ?

मैंने आश्चर्य के स्वर में कहा– कुमुदिनी, यहां ?

लीला– कुमुदिनी मुंह खोल दो और अपने प्यारे पति का स्वागत करो।

कुमुदिनी के कांपते हुए हाथों से ज़रा–सा घूंघट उठाया। लीला ने सारा मुंह खौल दिया और ऐसा मालूम हुआ कि जैसे बादल से चांद निकल आया। मुझे ख़्याल आया, मैंने यह चेहरा कहीं देखा है ? कहां? अहा, उसकी नाक पर भी तो वही तिल है उंगुली में वही अंगूठी भी है।

लीला–क्या सोचते हो, अब पहचाना ?

मैं–मेरी कुछ अक्ल काम नहीं करती। हूबहू यही हुलिया मेरे एक प्यारे दोस्त मेहर सिंह का है !

लीला–(मुस्कराकर) तुम तो हमेशा निगाह के तेज़ बनते थे, इतना भी नहीं पहचान सकते !

मैं खुशी से फूल उठा–कुमुदिनी मेहर सिंह के भेस में ! मैंने उसी वक़्त उसे गले से लगा लिया और खुब दिल खोलकर प्यार किया। इन कुछ क्षणों में मुझे जो खुशी हासिल हुई उसके मुक़ाबले में ज़िन्दगी भर की खुशियां, हेच हैं। हम दोनों आलिंगन–पाश में बंधे हुए थे । कुमुदिनी, प्यारी कुमुदिनी के मुंह से आवाज़ न निकलती थी। हां, आंखों से आंसू जारी थे।

मिस लीला बाहर खड़ी कोमल आंखों से यह दृश्य देख रही थी। मैंने उसके हाथों को चूमकर कहा–लीला, तुम सच्ची देवी हो, जब तक जियेंगे तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे।

लीला के चेहरे पर एक हल्की–सी मुसकराहट दिखायी दी बोली–अब तो शायद तुम्हें मेरे शोक का काफ़ी पुरस्कार मिल गया ।

❑ ❑

सांसारिक प्रेम और देश प्रेम

शहर लन्दन के एक पुराने टूटे–फूटे होटल में जहां शाम ही से अंधेरा हो जाता है, जिस हिस्से में फ़ैशनेबुल लोग आना ही गुनाह समझते हैं और जहां जुआ, शराब–खोरी और बदचलनी के बड़े भयानक दृश्य हरदम आंख के सामने रहते हैं उस होटल में, उस बदचलनी के अखाड़े में इटली का नामवर देश–प्रेमी मैज़िनी ख़ामोश बैठा हुआ है। उसका सुन्दर चेहरा पीला है,आंखों से चिन्ता बरस रही है, होंठ सूखे हुए हैं और शायद महीनों से हजामत नहीं बनी । कपड़े मैले–कुचैले हैं । कोई व्यक्ति जो मैज़िनी को पहले से न जानता हो, उसे देखकर यह ख़्याल करने से नहीं रूक सकता कि हो न हो यह भी उन्हीं अभागे लोगों में है जो अपनी वासनाओं के गुलाम होकर ज़लील से ज़लील काम करते हैं ।

मैज़िनी अपने विचारों में डूबा हुआ है । आह बदनसीब़ क़ौम ! ऐ मज़लूम इटली ! क्या तेरी क़िस्मतें कभी न सुध्रेंगी, क्या तेरे सैंकड़ों सपूतों का खून ज़रा भी रंग न लायेगा ! क्या तेरे देश से निकाले हुए हज़ारों जांनिसारों की आहों में ज़रा भी तासीर नहीं ! क्या तू अन्याय और अत्याचार और गुलामी के फंदे में हमेशा गिरफ़्तार रहेगी। शायद तुझसे अभी सुध्ररने की, स्वतन्त्र होने की योग्यता नहीं आयी। शायद मेरी क़िस्मत में कुछ दिनों और ज़िल्लत की बर्बादी झेलनी लिखी है। आज़ादी, हाय आज़ादी, तेरे लिए मैंने कैसे–कैसे दोस्त, जान से प्यारे दोस्त कुर्बान किये। कैसे–कैसे नौजवान, होनहार नौजवान, जिनकी मांएं और बीवियां आज उनकी क़ब्र पर आंसू बहा रही हैं और अपने कष्टों और आपदाओं से तंग आकर उनके वियोग के कष्ट में अभागे, आफ़त के मारे मैज़िनी को शाप दे रही हैं। कैसे–कैसे शेर दुश्मनों के सामने पीठ फेरना न जाने थे, क्या यह सब कुर्बानियां, यह सब भेंटें काफी नहीं है ? आज़ादी, तू ऐसी क़ीमती चीज़ है ! हां

रह सकता!

मैज़िनी इन्हीं ख़्यालों में डूबा हुआ था कि उसका दोस्त रफ़ेती जो उसके साथ निर्वासित किया गया था, इस कोठरी में दाखिल हुआ। उसके हाथ में एक बिस्कुट का टुकड़ा था। रफ़ेती उम्र में अपने दोस्त से दो–चार बरस छोटा था। भंगिमा से सज्जनता झलक रही थी। उसने मैज़िनी का कंध पकड़कर हिलाया और कहा–जोज़ेफ़, यह लो, कुछ खा लो।

मैज़िनी ने चौंक कर सर उठाया और बिस्कुट देखकर बोला–यह कहां से लाये ? तुम्हारे पास पैसे कहां थे ?

रफ़ेती–पहले खा लो फिर यह बातें पूछना, तुमने कल शाम से कुछ नहीं खाया है।

मैज़िनी– पहले यह बता दो, कहां से लाये। जेब में तम्बाकू का डिब्बा भी नज़र आता है। इतनी दौलत कहां हाथ लगी ?

रफ़ेती–पूछकर क्या करोगे ? वही अपना नया कोट जो मां ने भेजा था, गिरवी रख आया हूं।

मैज़िनी ने एक ठंडी सांस ली, आंखों से आंसू टप–टप ज़मीन पर गिर पड़ा। रोते हुए बोला– यह तुमने क्या हरकत की, क्रिसमस के दिन आने हैं, उस वक़्त क्या पहनोगे ? क्या इटली के एक लखपती व्यापारी का इकलौता बेटा क्रिसमस के दिन भी ऐसे ही फटे–पुराने कोट में बसर करेगा ? ऐं ?

रफ़ेती–क्यों, क्या उस वक़्त तक कुछ आमदनी न होगी, हम तुम दोनों नये जोड़े बनवायेंगे और अपने प्यारे देश की आने–वाली आज़ादी के नाम पर खुशियां मनायेंगे।

मैज़िनी– आमदनी की तो कोई सूरत नज़र नहीं आती। जो लेख मासिक पत्रिकाओं के लिए लिखे गये थे, वह वापस ही आ गये। घर से जो कुछ मिलता है, वह कब का खत्म हो चुका। अब और कौन–सा ज़रिया है।

रफ़ेती–अभी क्रिसमस को हफ्ता भर पड़ा है। अभी से उसकी क्या फ़िक करें। और अगर मान लो यही कोट पहना तो क्या ? तुमने नहीं मेरी बीमारी में डाक्टर की फ़ीस के लिए मैग्डलीन की अंगूठी बेच डाली थी ? मैं जल्दी ही यह बात उसे लिखने वाला हूं, देखना तम्हें कैसा बनाती हैं!

अच्छे से अच्छे कपड़े पहनकर गिरजाघरों में जा रहे है। कोई उदास सूरत नजर नहीं आती। ऐसे वक़्त में मैज़िनी और रफ़ेती दोनों उसी छोटी–सी अंधेरी कोठरी में सर झुकाये ख़ामोश बैठे हैं। मैज़िनी ठण्डी आहें भर रहा है रफ़ेती रह–रह कर दरवाज़े पर आता है और बदमस्त शराबियों को और दिनों से ज़्यादा बहकते और दीवानेपन की हरकतें करते देखकर अपनी ग़रीबी और मुहताजी की फ़िक्र दूर करना चाहता है। अफ़सोस ! इटली का सरताज जिसकी एक ललकार पर हज़ारों आदमी अपना खून बहाने के लिए तैयार हो जाते थे, आज ऐसा मुहताज हो रहा है कि उसे ख़ाने का ठिकाना नहीं। यहां तक कि आज सुबह से उसने एक सिगार भी नहीं पिया। तम्बाकू ही दुनिया की वह नेमत थी जिससे वह हाथ नहीं खींच सकता था और वह भी आज उसे नसीब न हुआ। मगर इस वक़्त उसे अपनी फ़िक्र नहीं रफ़ेती, नौजवान, खुशहाल और खूबसूरत होनहार रफ़ेती की फ़िक्र जी पर भारी हो रही है। वह पूछता है कि मुझे क्या हक़ है कि मैं एक ऐसे आदमी को अपने साथ ग़रीबी की तकलीफ़े झेलने पर मजबूर करूं जिसके स्वागत के लिए दुनिया की सब नेमते बांहें खोले खड़ी है।

इतने में एक चिठ्ठीरसा ने पूछा–जोज़ेफ़ मैज़िनी यहां कहीं रहता है ? अपनी चिठठी ले जा।

रफ़ेती ने खत ले लिया और खुशी के जोश से उछलकर बोला–जोज़ेफ़ यह लो मैण्डलीन का ख़त है।

मैज़िनी ने चौंककर ख़त ले लिया और बड़ी बेसब्री से खोला। लिफ़ाफ़ा खोलते ही थोड़े से बालों का एक गुच्छा गिर पड़ा, जो मैण्डलीन ने क्रिसमस के उपहार के रूप में भेजा था। मैज़िनी ने उस गुच्छा को चूमा और उसे उठाकर अपने सीने की जेब में खोंस लिया। ख़त में लिखा था –

माई डियर जोज़ेफ,

यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो। भगवान करे तुम्हें एक सौ क्रिसमस देखने नसीब हों। इस यादगार को हमेशा अपने पास रखना और ग़रीब मैण्डलीन को भूलना मत। मैं और क्या लिखूं। कलेजा मुंह को आया जाता है। हाय जोज़ेफ़, मेरे प्यारे, मेरे स्वामी, मेरे मालिक जोज़ेफ़, तू मुझे कब तक तड़पायेगा ! अब ज़ब्त नहीं होता। आंखों में आंसू उमड़ आते हैं। मैं तेरे साथ मुसींबते झेलूंगी, भुखों मरूंगी, यह सब मुझे गवारा है, मगर तुझसे जुदा रहना ग़वारा नहीं। तुझे क़सम है, तुझे अपने ईमान की क़सम है, तुझे अपने वतन की क़सम, तुझे मेरी क़सम, यहां

हमारे प्रकाशन

1.सोज़े वतन–मुंशी प्रेमचन्द	22.00
2.धूल मैं लट्ठ (हरियाणवी हास्य)–योगेन्द्र मौदगिल	30.00
3.हरियाणा की लोककथाए –सुरेश जांगिड़ उदय	22.00
4.हरिय़ाणवी के रंग–तरंग –सुरेश जांगिड़ उदय	22.00
5.कतरे में समन्दर (ग़ज़ल संग्रह)–गुलशन मदान	80.00
8.हास्यमेव जायते (हास्य कविताएं) –योगेन्द्र मौदगिल	40.00
6.भारतीय संविधान –सुरेश जांगिड़ उदय	30.00
7.मंज़र मंज़र अंगारे (ग़ज़ल संग्रह)–योगेन्द्र मौदगिल	40.00
8.सहमा हुआ समय (कविता संग्रह)–कमलेश शर्मा	50.00
9.यहीं कहीं (लघुकथा संग्रह)–सुरेश जांगिड़ उदय	10.00
10. प्रेमचन्द का लघुकथा साहित्य–सं.–सुरेश जांगिड़ उदय	25.00
11.गुलशन मदान ग़ज़ल के आईने में(शोध प्रबंध)–तेजिन्द्र	120.00
12.ओशो के संग–स्वामी आनंद अकीन	30.00
13.बाट मत जोहना (कहानी संग्रह)–सुरेश जांगिड़ उदय	25.00
14.हारे हुए चेहरे (कहानी संग्रह)–मनोज कुमार प्रीत	15.00
15.अमरवाणी –सं. सुरेश जांगिड़ उदय	30.00
16.पं. लख्मीचंद के उपदेशक भजन सं. सुरेश जांगिड़ उदय	30.00
17.पं. मांगेराम जीवनी एवं सांग सं. सुरेश जांगिड़ उदय	30.00

सुकीर्ति प्रकाशन
डी. सी. निवास के सामने, करनाल रोड,